

# बृजमोहन स्वामी “बैरागी” की कविताएँ

By : INVC Team Published On : 17 Jul, 2017 09:17 AM IST

## कविताएँ

### 1. घर लौटना और सौ बरस जीना

----- खुशी के कुछ मायने बोलकर नहीं बताये जाते जैसे आप चाय या पैसे के लिए बोलते हैं और खुशी किसी भी वक्रत टपक सकती है बिना बताये, खबर दिए पर आपका स्वागत है... ये महज़ एक शब्द नहीं फूल है जो खिलता है यूँ नागफनी... खुशी तब भी झलककर आयेगी जब आपका फोन चार्जर के आभाव में दम तोड़ देता है उस मौके पर यह पड़ोसी के लैंडलाइन तार से होकर आती है, जबकि इसके लिए आपके बेटे को किसी सरकारी नौकरी या तनख्वाह मिलने की देर होती है। खुशी के मायने अलग अलग होते हैं वे हथेली पर धरे होते हैं उनमें आपकी बाकि बची जान होती है खुशी, खबर है, यह कानों कान होती है आपके दिल का टुकड़ा ही मुझको छलता है ! यह आपकी खुशी हो सकती है जबकि मेरा रोना सर्वनाम शब्द है खुशी बदलती रहती जैसे कोई मौसम है , एक बुलेटिन में है जो रोज़ बदलता है ! एक खुशी को 'खुशी' बनाने की जद में सौ गुनाह माफ़ करते हैं जैसे तौलिये से बाल झटककर अभिनेता को रिझाती अभिनेत्रियाँ, खुशी एक कद्दूस जैसी आदमी के लिए बहुत कीमती है। तमाम झुटे गवाहों और बयानों को मध्यनजर रखते हुए, घबराई सांसों और कजलाई आँखों को लेकर जब हम अपने अपने घरों को लौटाना चाहते हैं तो खुशियाँ माओं की तरह कहती हैं कि सौ बरस और.. तुम्हें जीना ही चाहिए।

### 2. दम तोड़ती विडम्बनाएं और आज़ादी

----- हमारे लिए मरने वाले सबसे बहादुर लोगों ने अपने जन्मदिन रूठी हुई प्रेमिकाओं की तरह नहीं मनाये या किसी दूसरी तरह भी नहीं मनाये इस इंतज़ार में कि हम सबका मत एक होगा, पर हमारी सीमाओं तक पहुंचते पहुंचते विडम्बना इस कदर दम तोड़ गई कि उन्होंने जो कहा वह मैंने और आपने नहीं सुना। मिसेल फोको समेत तमाम लोगों ने अपने मोम जैसे हाथों से कागज़ों पर खून से लिखे मलाई की तरह बिलोये हुए शब्द उससे बहुत अलग हमने पढा या ज्यादा कहें तो हमें ज़बर्दस्ती पढ़वाया गया ताकि हम क्लास की सबसे आगे वाली बेंच पर बैठ सकें और हर महीने हमारे गार्जियन ऑफिस में अकड़ अकड़ कर प्रिंसिपल को महानताएं बता सकें। आज़ादी कैसे मिली किसको मिली और कितनी मिली ये बातें हमारे भीतर जाकर बिलकुल भिन्न अर्थों में खिलखिलाई और यह आखरी से आखरी बात आप मेरे ऊपर थोपेंगे कि मैंने कहा है। ठीक इसी तरह उन खून से भी लाल दस्तखतों और इतिहास में दी गई सबसे सफेद गवाहियों को नहीं समझा हमने, इसके बाद चाय पीकर उपनिषद के ऊपर कप रखे गाने सुनकर बाइबिल पर इयरफोन रखे और दुनियां को बताना चाहते हैं कि हमने आज़ादी का मतलब सीख लिया।

### 3. इंसाफ मांगती लड़की

----- "आफरीन" नाम की लड़की ने अगर इंसाफ माँगा होता तो क्या उसे मिलता ? शायद हज़ारों बेज़ुबान लड़कियों के मामलों की तरह फाइलों में दम तोड़ देती। यह बात किसी न्यूज़ में नहीं आई। अँधेरे ही में रोल कट करना और फिर अखबार में छपना ऊपर से जो पारिश्रमिक मिला वो लेकर हम घर आए ताकि हमारे बच्चे इंग्लिश मीडियम में पढ़ें। जिंदगी यूँ ही ! रिशतों में लूटी। लेकिन इंसाफ मांगती लड़की की आँखों में किसी ने नहीं देखा। हम सब दोबारा से बौने होते गए, हमारी आत्माएं मिट्टी हो गई आत्माएं उपकरण भी बनी इसलिए हमारी आत्माओं ने

खुद को ही बताया कि बंदिश तोड़ ही देती हूँ सब , हाव - भाव पर जब हो !

✖ लेखक परिचय

## कवि बृजमोहन स्वामी 'बैरागी'

हिंदी और राजस्थानी कवि व लेखक

(उपनाम - कवि बैरागी) पता - बरवाळी, नोहर , हनुमानगढ़ जिला , राजस्थान (335504) सम्पर्क - birjosyami@gmail.com कार्य क्षेत्र- कहानीकार, नाटककार , फ़िल्म राइटर, रंगमंच कर्मी , और राजस्थानी भाषा मान्यता आंदोलन में सक्रिय योगदान

वर्तमान - स्कूल अध्यापक, और जिला अध्यक्ष, राजस्थानी भाषा संगर्ष सेना (हनुमानगढ़ इकाई)

रचनाओं के अन्य कॉपीराइट धारक को गद्य कोश में मेरी रचनाओं के संकलन पर किसी भी प्रकार की कोई भी आपत्ति नहीं है और इन सभी की ओर से मेरी रचनाओं को कोश में जोड़ने की अनुमति है। -बृजमोहन स्वामी 'बैरागी'

URL : <https://www.internationalnewsandviews.com/बृजमोहन-स्वामी-बैरागी-2/>

INTERNATIONAL NEWS AND VIEW CORPORATION



अंतरराष्ट्रीय समाचार एवं विचार निगम

12th year of news and views excellency

Committed to truth and impartiality

Copyright © 2009 - 2019 International News and Views Corporation. All rights reserved.